

শিষ্ট : => সংস্কৃত আশিষে আত্মবেদ নামের অর্থশিষ্ট
বিস্তার দাও।

উঃ => আরতব্যং যেতি জ্ঞানীনকাল থেকেই আত্মবেদের
ব্যাপক অনুশীলন করেছিল। এই 'আত্মবেদ' নামটি
হাঃ সংস্কৃত নামের সংগ্রহে পাঠিত যথা আত্ম বেদ
বেদ। আত্ম নামের অর্থ জীবন বেদ, বেদ নামের অর্থ
জ্ঞান বা বিজ্ঞান। অতএব আত্মবেদ নামের অর্থ নৈকায়
জীবনের জ্ঞান বা বিজ্ঞান। অর্থাৎ যে জ্ঞানের মাধ্যমে
জীবনের কল্যাণ সাধন হয় তাকে আত্মবেদ বা জীববিদ্যা
বলে। ঐকমত্যে যে নামই লাগে করলে আত্ম অক্ষরকে
সিদ্ধির দ্বিতীয় অক্ষর অর্থাৎ স্মার্ত নামের বলা হয় আত্মবেদ।
হরকান্ত হরিত্যয় বলা হয়।

“হিতমিত্তং সুখং হঃখামাত্মসুখ্য হিতাশিতম
জ্ঞানমিত্তং যদোক্তামাত্মবিদঃ স। উচ্যতে ॥”

অর্থাৎ আত্ম হার শিষ্টের - হিতম, অশিতম, সুখাম ও
হঃখাম। যে দুইবিধি আত্ম বেদে 'আত্ম' শিষ্টের ও অশিতের
সমস্ত বিদ্যা, আত্মের পরিচয়, ও অক্ষয়নামের যে নামই
কাজে লাগে তাকে আত্মবেদ বলে।

আত্মবেদের প্রয়োজন : =>

জীবনের লক্ষ্য অর্জনের
সময় থেকে না কেন, স্মার্ত
লাভে উল্লসিত হওয়ার স্থলে আত্ম সুখাম ও নীরাম
সময়। অস্বাভাবিকতা ও কষ্টের জীবন-সংগ্রামে যথার্থ
স্থল কারণ। হরকান্ত হরিত্যয় বলা হয়।

“যদ্বাখ্যামাত্মায়াত্মানুভবায়ঃ স্থানমুত্তম
হোতামাত্মানুভবায়ঃ সোমসো জীবিতস্য ৪।৩

Blank lined area for notes or additional text.

आर्य आर्यवेद शास्त्र द्वारा ही मारीरके युद्ध उ नीरका
 राधा सुभर । किंतु आर्य आर्ये आर्य रररर नियम
 ककरवमी लररर कर थारु । अररर आर्यरररर आर्य
 नियम लालन करलुओ वरररर राउ रथारु निरुति
 ररर । अररर "मारीरु वररररररर" आर्यर ररर
 आर्ये वररर आरु । ओर आर्यवेद आर्ये निरिउ
 ओरु वरुअरररु आर्यरररु आरर लालन उरररर
 ओरु ओरु रर उरर रररर ररर । कररु
 मारीरु ररररर वरुअरररु आर्यरररु अने रररर
 वररर, ओररर रररु निरुति लारु कररु करु
 आर्यवेदशास्त्र अररररर, ओरु ररररररर वरर
 ररर — " करु वरुअरररररर
 वरुअरररररर (ओरु उरररर) आर्यवेदम् ॥२

आर्यवेदशास्त्रर उीररि : =>

वेदल आर्यवेद
 जनरररि, ओरु रर
 अर्यररर अरर आर्य सुरि करर लार 'अरररररर'
 नारि वेदलरु, ओरु निररु वेरु वेरु अररु अर्यरर
 रररु ओर्यवेद शास्त्र रररर कररररर । लार ररि
 ओर अरु आरकलरु ओरररु उ अरररर ररर रर
 वरुअररर अरररररररु अरु अरु अरररु रररु
 ररर अरररु ओर्यवेद सुरि करर । अररर करु
 थारु ओरु अरररु ओर्यवेद रररर लारु कररु ररु
 आररर, अरु अरु अरु अरररर । अरररररररर
 करु थारु ओरररररररर, ओरररररररर
 करु थारु रररररु ररु । वेरुअरु अरि रररर करु
 थारु ओर्यवेद रररर अरुन कररल वरु ओर्यवेद
 वरु अररर रर ।

A large rectangular box with horizontal lines, intended for additional notes or a signature.

भारतीय आधुनिक चिकित्सा में चिकित्सा विज्ञान :-

चिकित्सा द्वारा विभिन्न प्रकार के आधुनिक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान

- 1) अल्पायुषीय (बाल्य चिकित्सा व वृद्धी चिकित्सा / Major Surgery)
- 2) आन्तरीय चिकित्सा (रोग, कान, नाक व आंख की चिकित्सा)
- 3) कारण चिकित्सा (आधुनिक चिकित्सा विज्ञान / Therapeutics)
- 4) भ्रूण चिकित्सा (मातृमले चिकित्सा)
- 5) कोशिका चिकित्सा (नसिका चिकित्सा)
- 6) अंग चिकित्सा (विश्व व विश्वविद्यालय चिकित्सा)
- 7) रसायन चिकित्सा (वायु चिकित्सा व अंग चिकित्सा)
- 8) बायो चिकित्सा (धूम्र पान व धूम्र पान चिकित्सा)

उल्लिखित चिकित्सा विज्ञानों में वहाँ विभिन्न चिकित्सा विज्ञानों का वर्णन है। इससे स्पष्ट है कि चिकित्सा विज्ञानों के विकास के लिए चिकित्सा विज्ञानों के अभाव में चिकित्सा विज्ञानों का विकास नहीं हो सकता है।

- 1) अल्पायुषीय चिकित्सा
- 2) आन्तरीय चिकित्सा
- 3) कारण चिकित्सा
- 4) भ्रूण चिकित्सा
- 5) कोशिका चिकित्सा
- 6) अंग चिकित्सा
- 7) रसायन चिकित्सा
- 8) बायो चिकित्सा

भारत में चिकित्सा विज्ञान की विशेषता :-

भारत में चिकित्सा विज्ञान की विशेषता यह है कि चिकित्सा विज्ञानों के अभाव में चिकित्सा विज्ञानों का विकास नहीं हो सकता है।

“आहोरात्रिं ब्रह्म ब्रह्मणेति: मातुं शिक्षा अमीया तेषां बुद्धि: ॥
व्यस्यन् दक्षय विद्वन्, व्यस्ये व्यसयाद्योऽस्य विवृष्टी: ॥”
अर्थात् हे ब्रह्म, आज्ञा देऊन तुला आज्ञा देण्यास सुरुवात
रुपां विद्वाना मातुर्व्य जीवित प्राप्त कराय। बुद्धि, आज्ञादेव
मातुर्देव, विनाश कर, आज्ञादेव प्राप्त निर्मूलन कर
देव, आज्ञादेव सकल व्यापि कर कर।

जेव्हा अर्थवाना देवदेव, अर्थवान, ऐश्वर्यवान, सौख्यिक
ब्रह्म देवदेव ब्रह्म निश्चित आहे, अर्थवान देवदेव।
अर्थवाना व्यासना ज्ञानाधिपति तसोच्य विद्वाना देवदेव
कलना कर ब्रह्मदेव आश्रय जाऊ कर कराय
होयतेन। जेव्हा अर्थवाना विद्वाना ज्ञान व्यासिकते
उदाहरणित ह्याहे —

“अथ ये विद्वान् शशिमान् कलाभ्यां होदयान् प्रितिवा विवा
विद्वान् ।

अथैहि उवाचान्न एव हि ज्ञान
अथैत्यादेवैर्वा वा साहसि ॥”

आत्मवीरोध, अलोकना, उद्वेग, उद्वेगाय, वाद, क्रम अर्थ
वैद्य निराभास ब्रह्म अर्थवान आहे, ही च निरोध
जीवन देव सुरुवात सुरुवात ज्ञान अर्थवान देवदेव
ज्ञान देवदेव। जेव्हा विद्वाना एकाच अर्थवान देवदेव
उ आश्रयिलेला देव अर्थवाना अर्थवान देवदेव देव देव देव देव
ह्याहे — “अथा ज्ञानेन साधिता च न विद्वीते न विद्वीते:
येवा ये ज्ञान आ विद्वीते: ॥”

॥ वैदिक साहित्ये जोर देऊन याच देव, आशीर्वा-
विद्या, अर्थवान ३ आश्रयिलेला वैदिक व्यासिकते

नमस्कार करतात ना। वला वारा नमसाठनेर वारा
सुसुक्त असे अनुदिते वल सुसुक्त असाठित।
दिकियसामान्यतर असार एक डाल्लधायगा असे वल
आज्यापर मिय तेल रचित तेलअनु वा तेलअसाठित
आसार एक उच्चल वेगठिक्क वासले विनि विनिवि
अनु रचना करन। यथा - १) असे वलअसाठित २) असाठित
असाठित ३) असारअसाठित। वासलेपर लरवठी
आसार डाल्लधायगा असाठितवासाठित शालन - मावकर,
कामसागिनिकु, कविक अमुध।

आधुनिके वेगवनाति : => वेगवेगवे उदुठ उ

साठिमीलित ये आधुनिक दिकियसु वेकाले विवर
दुववार असे आसन लाठ करविल, रतमाने वेग
वेगवनाति विव्यापर उदुठ कर। वेग वल कठकडालि
करन आठ। यथा - १) वाठिःकाकर आठमान
वेगवेग वेगवेग वल वल विविठ शाठिल।

- २) (आठवेर दुवडा) सुसलमान वाठकाले आधुनिक
आठवेर वेगवेग सुस विल।
- ३) वाठिःकाकर वाठकाठि कराल असाठ आधुनिक
वेगवेग वेगवेग सुवठित शा।
- ४) आठिःकाकर लरवठीकाले असकारी वेगवेग
आधुनिक वेगवेग वेगवेग करन।

□ आठवेर उठवेगवेग, अठवे वेगवेग
आधुनिक अठवे वेगवेग आठवे वेगवेग वेगवेग
आधुनिक दिकियसु "वेगवेग वेगवेग वेगवेग
वेगवेग वेगवेग लाठ।"
